दैनिक भास्कर

मुरैना में उतर रहीं क्लूकोज की खेप:नकली दूध बनाने का कारोबार चरम पर, भोपाल तक जाता मिलावटी पनीर

मुरैना के जौरा में इन दिनों ग्लूकोज की खेप हर दूसरे दिन उतर रही है। यह चोरी छिपे पगारा रोड व रुनीपुर रोड पर उतर रही है। इस क्लूकोज से नकली दूध बनाया जा रहा है और जौरा के तार भोपाल तक जुड़े हैं। यहां से बनाया गया नकली पनीर भोपाल तक भेजा जाता है। बता दें, कि दीपावली का त्योहार नजदीक आते ही मुरैना के जौरा क्षेत्र में नकली दूध-मावा व पनीर बनाने का कारोबार चरम पर पहुंच गया है। यहां नकली दूध बनाने के लिए ग्लूकोज के साथ-साथ, यूरिया खाद, माल्टो ड्रेक्सिन पाउडर, पाम ऑयल व आरएम केमीकल के साथ-साथ वाशिंग पाउडर तक मिलाकर नकली दूध तैयार किया जाता है। इस दूध से न केवल मावा बल्कि पनीर तक बनाया जाता है और उसे सप्लाई कर लोगों की जान से खिलवाड़ किया जा रहा है। बता दें, कि त्योहार पर खासकर दीपावली के त्योहार पर मावा की मांग कई गुना बढ़ जाती है, जिसका पूरा फायदा यह मिलावटखोर उठा रहे हैं।

इस तरह बनता नकली दूध

3 किलो पाउडर, 2 लीटर केमीकल व 40 लीटर पानी का अनुपात मिलाकर 45 लीटर नकली दूध तैयार किया जाता है। 45 लीटर नकली दूध तैयार करने की लागत लगभग 400 रुपए आती है और उसे चार गुना अधिक दर पर यानि 1600 रुपए में बेचा जाता है।

डेयरियों में इस तरह बन रहा नकली दूध

दूध की क्रीम निकालने के बाद बचे दूध में पानी मिलाया जाता है। दूध को सफेद करने के लिए डिटरजेंट

लिक्विड मिलाया जाता है। दूध में बसा बढ़ाने के लिए रिफाइंड तेल मिलाया जाता है। मिठास के लिए ग्लूकोज पाउडर मिलाते हैं। फेट बढ़ाने के लिए नाइट्रोजन नामक केमिकल मिलाया जाता है। बाद में एसे मशीन से अच्छी तरह मिलाया जाता है तथा नकली दूध बनकर तैयार हो जाता है।

कानपुर-भोपाल में जौरा के पनीर की मांग

मुरैना के जौरा के नकली मावा और पनीर की सबसे अधिक डिमांड कानपुर(उत्तर प्रदेश) के अलावा भोपाल में सबसे अधिक है। यहां नकली दूध के जरिए पनीर तैयार कर देशभर में भेजा जाता है। पनीर का उपयोग इन शहरों में स्थानीय स्तर पर खपाने के लिए किया जाता है। इस काम के लिए त्योहारी सीजन को चुना जाता है।

जांच रिपोर्ट देरी पर आने का उठाते फायदा

त्योहारों की मांग की तुलना में आपूर्ति नहीं होने से कारोबारी इसका पूरा फायदा उठाते हैं। मिलावटी दूध, मावा व मिठाई बाजार में बिकने लगती है। खाद्य सुरक्षा विभाग सैंपल लेता है, लेकिन जांच रिपोर्ट आने में 20 से 25 दिन तथा कई बार तो महीना-डेढ़ महीना तक लग जाता है। तब तक त्योहार का सीजन खत्म हो जाता है।

कई मिलावटी बन चुके करोड़पति

बता दें, कि वर्ष 2019 में एसटीएफ ने खुलासा किया था कि मुरैना के ढकपुरा गांव में रहने वाले देवेन्द्र गुर्जर व जयवीर गुर्जर की किस्मत इसी मिलावटी कारोबार ने बदल दी थी। उनका सिंथेटिक दूध और उससे बनने वाले दूध का अवैध कारोबार था। मध्यप्रदेश पुलिस की विशेष कार्यबल(एसटीएफ) ने जब इस मामले की गहराई से जांच की तो पता लगा कि देवेन्द्र गुर्जर के साथ चंबल के कुछ अन्य डेयरी मालिक जो केवल मध्यप्रदेश में ही नहीं बल्कि हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश व राजस्थान की प्रसिद्ध कंपनियों को सिंथेटिक दूध बेचकर पांच से सात वर्षों में ही अमीर बन गए थे।

एक माह में आधा दर्जन डेयरियों पर कार्रवाई

पिछले एक माह के दौरान अकेले जौरा क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा आधा दर्जन डेयरियों पर कार्रवाई की गई लेकिन उसके बावजूद मिलावटी दूध व खाद्य पदार्थों का अवैध कारोबार बदस्तूर जारी है।

Source: https://www.bhaskar.com/local/mp/morena/news/fake-milk-making-business-at-its-peak-adulterated-paneer-reaches-bhopal-130405010.html